भारत की कम्युनिस्ट पार्टी(माओवादी)

COMMUNIST PARTY OF INDIA (MAOIST)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ती

शहीद कॉमरेड्स भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव के 90वी स्मृति दिवस मार्च 23 को साम्राज्यवादी विरोधी दिवस के रूप में मनावें ।

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुवे खातिल मे हैं।'

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

प्यारे देश वासियों।

हमारी देश की जनता असमान बलिदानों के साथ पराय शासन को उखाड़ पेंकने की लक्ष्य से प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर लग-भग 100 साल (1857-1947) ब्रितानियों के लाठी एवं जेल और गोलियों से न डरते हुये निस्वार्थ भावना से लडे थे. लाखों की संख्या में आंदोलनकारियों ने काला पानी की सजा भुगतना पड़ा. 'आजादी हमारी जन्म सिद्ध अधिकार' कहते हुए देश के लिये हजारों लोग फंदे को गले लगाये। उनमें अमर शहीद कामरेड्स भगत सिंह, राजगुरू, दुखदेव अत्यंत आदर्शमय है। उन तमाम शहीदों को विनम्रता से याद करते हुए मार्च 23 के दिन उनके बलिदानों को सलाम करेंगे। हम इस नारा के साथ आवाज बुलंद करेंगे कि वे औपचारिक आजादी के पक्ष में नहीं थे। हमें उन अमर शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए जनता के जनवादी को हासिल करने का शपथ लेंगे.

1947 से पहले हमारे देश के जनता मात्र ब्रितानी साम्राज्यावादियों के खिलाफ में लडे थे, लेकिन आज कई साम्राज्यवादियों के विरोध में लड़ना पड़ रहा है. मुख्य रूप से अमेरिका और उसके साथ ब्रितन, जर्मनी, फ्रान्स, इतली, जापान और रूस सहित इसी बीच में मैदान मे उतरे नई समाजवादी साम्राज्यवाद चीन को भी सामना करना पड़ रहा है। लेकिन हमारा देश के शासकों ने संसद में बनाने वाली हर एक कानून और अपनाने का हर एक कदम एवं उनसे करने का हर एक समझौता उनके हितों के पक्ष में लिया जा रहा है। आज के कृषि कानून उसके लिए एक बड़ा उदाहरण है. उन कानूनों को रद्द करने के लिये देश के किसान पिछले 105 दिनों से लड़ रहे हैं। लेकिन देश को 'मेक इन इंडिया' को सौंपे मोदी अंड कंपनी अपनी कुठिल राजनीति से यह बता रहा है कि पिछले 75 सालों का किसानों के समस्याओं का निराकरण के लिये यह कानून अवस्यंभावी है। सरकार के साजिशों को हराते हुए समूचे देश उन अन्नादाताओं के पक्ष में खड़े हूए है। हमारी केन्द्रीय कमेटी तमाम देश के जनता से यह आह्वान कर रही है कि देश की राजधानी को घेर कर बैठे किसानों से कंधे-से-कंधा मिलाकर सरकार के विरोध में हम सब एक जुट से शहीद भगत सिंह के राह पर चलेंगे।

साम्राज्यवादी कारपोरेट घरानों के हित में बनाये गए कृषि कानूनों को रद्द करने तक देश के किसान लड़ना अनिवार्य है. दूसरी तरफ हमारे देश में 2017 में शुरू हुई जी.एस.टी को रद्द करने की मांग को लेकर देश के समूचे व्यापारियों ने मार्च 6 को भारतबंद का एलान किये. वे लोग बिना रजी के संघर्ष का संकेत भी दिये। सिंगरेणी को निजीकरण करने का विरोध में लाखों मजदूर लोग, रक्षा क्षेत्र में सौ फीसदी विदेशी पूंजी का विरोध करते हुये हजारों मजदूर एक महिना हड़ताल किये. देश में शिक्षा एक व्यापार बन गया. आज हमारे देश में सड़कों पर बिना उतरे कर्माचारी नही है. पिछले मार्च 23 से मतलब ठीक एक साल से कोरोना के तालाबंदी से परेशान घोर गरीबों के लिए आज की को-वेक्सिन मिलना कल्पना से परे है।

देश में अमल हो रहे साम्राज्यवादी नया उदारवाद अर्थनीतियों के चलते सभी क्षेत्रों में देश की जनता कई समस्याओं से उथल-पुथल हो रहे हैं। उन नीतियों के फलस्वरूप लाखों आदिवासी अपने अस्तित्व की समस्या से जूझ रहे हैं। उन नीतियों से जुड़े हिन्दुत्व नीतियां देश के दलित, मुस्लिम, आदिवासी एवं महिलाओं को दुयम दर्जा के नागरिक के रूपमें देखते हैं। वे नीतियां देश की विविधता को बर्बाद कर रहे हैं। हर पल देश की महिलाएं पितृसत्ता की शिकार बन रहे हैं। इस लिये इन तमाम लोगों के सामने साम्राज्यवादी विरोधी संघर्ष के बिना कोई चारा बचा नही।

साम्राज्यवादियों के विरोध मे डट कर हमारा देश के आजादी के लिये लड़े लाखों लोगों का और देश भक्तों का सपनों को साकार करने के लिए साम्राज्यवादियों के विरोध में डटकर लड़ना है. तब ही हमारी देश को सही आजादी एवं मुक्ति मिलेगी. उन महान योद्धाओं का संघर्ष एवं आदर्शो के रोशनी में आज की साम्राज्यवादी विरोधी जनांदोलनों को तीव्र करते हुये साम्राज्यवाद को नेस्तानाबूद्ध करेंगे। आईये, हम सब कंधा से कंधे मिलाकर लडेंगे. मोदी, अमित शाह और भागवत के ब्राह्मणीय चलकपट राष्ट्रवाद एवं देश भक्ति का भंडाफोड़ करेंगे। हम सब हिम्मत और साहस के साथ यह कहेंगे कि हम ही शहीद भगत सिंह के सच्चे वारिश है। आज हमारे देश में जनांदोलन का मिशाल के रूप में उभर कर आई शाहीनभाग, सिंघू, गाजीपुर एवं टिकरी बार्डर और छत्तीसगढ़ के दौड़ाई के परम्पराओं को विस्तार करेंगे.

हमारी देश को नाम मात्र आजादी मिलकर 74 वर्ष पूरी हुई। अगले साल 2022 में देश की जनता 75वी आजादी की वर्षगांठ मनाने के लिये शासकों ने अब से ही 'आजादी का अमृत महोत्सव' कहते हुये खुशियां बांट रहे हैं। उन समारोहों का संचालन के लिये देश का प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 249 लोगों से एक जंबो कमेटी का गठन किया गया। लेकिन, वास्तव में हमारी देश और देश वासियों को सही आजादी प्राप्त नही हुई. बीते 74 वर्षो में हमारी देश दूसरों पर निर्भर होते हुये स्वावलंबना से भारत की अर्थव्यवस्था कितने दूर चले गई परकने की वक्त आ गई। आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, प्रतिरक्षा, पौद्योगिक, शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में बढ़ी निर्भरता को देश की जनता के सामने रखने की वक्त यह है। हमारे देश के शासकों एवं उनके साम्राज्यवादी मालिको ने बेरोकटोक, बिना थकावट सुनवाने का सम्मिलित विकास एवं सम्मिलित जनवादी का पर्दाफाश करने की दायित्व इस देश के तमाम बुद्धिजीवियों पर है। हमारी पार्टी उन लोगों से यह अपील कर रही है कि उस काम के लिये फौरन कमर कसे।

- **मार्च 23 को साम्राज्यवादी विरोधी दिवस के रूप में मनाएंगे। अमर शहीदों का बलिदानों का स्मरण करेंगे। साम्राज्यवाद को दफना देंगे।**
- **नई कृषि कानून रद्द के लिये संघर्षरत किसानों का समर्थन में गांव-गांव में गली-गली में सभा एवं रैलियों का आयोजन करें।**
- **पाखंडी मोदी सरकार की जन विरोधी नीतियों का खंडन करते हुये मजदूर एवं किसान, छात्र, कर्मचारी, बुद्धिजीवी, महिना एकता जिंदाबाद की नाराएं बुलंद करें।**
- **जनता के दिलों में सदा के लिये बस गये शहीद भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव के आदर्शो को ऊंचा उठाने का शपथ लेंगे।**
- **इंकलाब जिंदाबाद।**

11 मार्च 2021

प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा (माओवादी)